Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

साहित्य सृजन में कृत्रिम मेधा का प्रयोग : संभावनाएँ और चुनौतियाँ

डॉ. देविदास भिमराव जाधव*
हिंदी विभागध्यक्ष,
पानसरे महाविद्यालय अर्जापुर,तहसील बिलोली जिला नांदेड़

शोध सार

यांत्रिक युग की धरा पर कृत्रिम मेधा के कदम पड़ते ही मानव जीवन की दिशा ही बदल गई है। वर्तमान समय में मनुष्य विज्ञान के आश्चर्यचकित कर देनेवाले प्रयोग और तकनीकी सुविधाओं से मानव मस्तिष्क के विचारों को वास्तव में उतारा जा रहा है। इससे न केवल समय की बचत हो रही है बल्कि आय का स्रोत भी बढ़ रहा है। कृत्रिम मेधा के प्रयोग से साहित्य संस्कृति और संगीत के क्षेत्र में नई क्रांति की लहर आ चुकी है। कृत्रिम मेधा के प्रभाव से स्वास्थ्य एवं चीकित्सा, शिक्षा,एवं साहित्य, कृषि एवं दूरसंचार आदि में नये प्रयोग हो रहे है। कृत्रिम मेधा ने मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में हस्तक्षेप किया है। साहित्य सृजन भी इससे अछूता नहीं रहा। कविता, कहानी, निबंध, अनुवाद तथा आलोचना जैसे साहित्यिक क्षेत्रों में कृत्रिम मेधा के प्रयोग ने नए अवसरों के द्वार खोले हैं, वहीं अनेक बौद्धिक, नैतिक और रचनात्मक चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। यह शोध पत्र साहित्य सृजन में कृत्रिम मेधा की भूमिका, संभावनाओं, सीमाओं और उससे जुड़ी चुनौतियों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है। साहित्य मानव अनुभूति, संवेदना और कल्पना की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रहा है। परंपरागत रूप से साहित्य सृजन को मानव मस्तिष्क और भावनात्मक चेतना का प्रतिफल माना जाता है। किंतु 21 वीं सदी में कृत्रिम मेधा आधारित प्रणालियाँ भाषा को समझने, उसका विश्लेषण करने और नवीन पाठ उत्पन्न करने में सक्षम हो गई हैं।

बीज शब्द: कृत्रिम मेधा, साहित्य सृजन, रचनात्मकता, तकनीक, भाषा, मौलिकता।

Received: 11/12/2025
Accepted: 24/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
डॉ. देविदास भिमराव जाधव
Email: drdevidasjadhav2@gmail.com

प्रस्तावना : कृत्रिम मेधा वह तकनीक है जिसके द्वारा मशीनों या कंप्यूटर प्रणालियों को मानव जैसा सोचने, सीखने, निर्णय लेने और समस्या हल करने की क्षमता दी जाती है। कल तक साहित्य प्रतिभावान लेखक और कवियों की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का सार रुप था किंतु वर्तमान समय कृत्रिम मेधा के उपकरणों के उपयोग से तत्काल साहित्य सृजन किया जा रहा है। साहित्य के आवश्यक तत्व - प्रतिभा, कल्पना, भाव और शैली आदि का उपयोग कर कृत्रिम मेधा स्तरीय साहित्य का सृजन कर रही है। उसमें मानव मस्तिष्क जैसा संवेदनात्मक रुप भी देखने को मिल रहा है। जैसे ही हम कृत्रिम मेधा को आदेश देते है वह तुरंत हमारे सामने बहुत सारे विकल्प रख देता है। मनुष्य एक-एक विकल्प का चयन करते हुए कहानी, कविता, गज़ल, निबंध, गीत आदि का सृजन करते है।

शोधालेख : कृत्रिम मेधा के पास उपकरणों की आश्चर्य जनक उपयोगिता भी है और नई पीढ़ी को प्रभावित करने की क्षमता भी। Curated AI के संस्थापक एवं मुख्य सम्पादक 'कार्मेल एलिसन' का मानना है कि, मशीन-लर्निंग की मदद से कविता और गद्य आसानी से लिखा जा सकता है। 19 मई 2017 में माइक्रोसाप्ट के कृत्रिम मेधा xiaoice द्वारा निर्मित 136 कविताओं का संकलन 'Sunshine Misses windows' चीनी कविता को चियर्स पब्लिकेशन बिजिंग द्वारा प्रकाशित किया गया है। एरान हदास इसराइल कवि जो Augmented Poetry में क्रांतकारी अविष्कार का सूत्रपात किया है। उनका मानना है कि, मानव हस्तक्षेप के बिना भी कृत्रिम मेधा कविता का सृजन कर सकती है। ये ब्राइन कंप्यूटर इंटरफेस BCI और माइंड मेमोरी इंटरफेस MMI उपकारणों के माध्यम से सम्भव है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के निर्माण में जिन प्रौद्योगिकियों की भूमिका है,

उनमें विशाल भाषा मॉडल (मनुष्य जैसी गुणवत्ता वाले पाठ उत्पन्न करने और समझने के लिए निर्मित), नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (मानव भाषा को समझने और उत्पन्न करने के लिए निर्मित), मशीन लर्निंग (उपलब्ध डेटा का पैटर्न पहचानने आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं सीखते जाने वाली प्रौद्योगिकी), डीप लर्निंग (मशीन लर्निंग का एक उपसमुच्चय), जेनरेटिव एडवर्सरियल नेटवर्क (असली लगने वाले फोटोग्राफ्स, वीडियो और ऑडियो को उत्पन्न करने की प्रणाली), कम्प्यूटेशनल क्रिएटिविटी (नई संगीत रचना, चित्रकला, लेखन की तकनीक), रोबोटिक्स (मनुष्य की तरह भौतिक कार्यों को करने वाली मशीन बनाने की प्रणाली) और न्यूरोमॉर्फिक कंप्यूटिंग (मानवीय मस्तिष्क की जैसे कंप्यूटर सिस्टम व अन्य उपकरण विकसित करने वाली प्रौद्योगिकी) आदि प्रमुख हैं।

वास्तव में कृत्रिम बुद्धिमत्ता किसी एक तकनीक का नाम नहीं है, बल्कि यह कई प्रौद्योगिकियों की समेकित उपलब्धियों की एक काम चलाऊ संज्ञा है। विभिन्न प्रौद्योगिकियाँ मिलकर कंप्यूटरों को कुछ ऐसे जटिल कार्यों को करने की क्षमता प्रदान करती हैं, जिन्हें पहले सिर्फ मनुष्य ही कर सकते थे। दूसरे शब्दों में कई तकनीकों का संयोजन अब 'बुद्धिमत्ता' का निर्माण कर रहा है, जो अब तक सिर्फ मनुष्य व कुछ अन्य चेतन प्राणियों की विशेषता थी। इनमें से सबसे चर्चित है मशीनों द्वारा किया जाने वाला लेखन। 'भाषा मॉडल' भाषा के डिजिटल नमूनों के विशाल भंडार के रुप में विद्यमान है। जिन्हे पाठ तैयार किया जाता है। ये मॉडल भाषा के करोड़ों शब्दों का अर्थ समझकर भाषा का सामान्य रुप तैयार करते है और इसी आधार पर मौलिख लेखन करने की क्षमता विकसित होती है। इस दौरान मॉडल मानव के अंतर्मन का भी अध्ययन करते है।

जो भी हो कृत्रिम मेधा संसार की सभी भाषाओं में न केवल साहित्य सृजन करने में सक्षम है बल्कि सृजन साहित्य का अनुवाद और आलोचना भी करता है। मशीन- लर्निंग के उपकरण द्वारा अलगोरिथम विविध रूपों का उपयोग करते हुए साहित्य सृजन के नवाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है। रजनीकांत की फ़िल्म 'रोबोट' को हमने फैंटासी मानते हुए अस्वीकार कर दिया था कि, मैन, मशीन और मोहब्बत लगभग असम्भव है। मशीन में मनुष्य की तरह संवेदना नहीं होती। वर्तमान यांत्रिक मानव में यह विशेषता देखी जा सकती है। इन उपकरणों में बुद्धि के साथ-साथ हृदय का भी विस्तार हो रहा है। भले ही इंसानी दिमाग़ की बराबरी करने में उसे सदियाँ लग जाय पर इंसानी बुद्धि से वह पीछे नहीं है। कृत्रिम मेधा का क्षेत्र बहुत ही व्यापक होता चला जा रहा है। उसे ग़ज़ल और गीत लिखने लिए कहा जाए तो वह तुरंत उसी प्रकार का गीत और ग़ज़ल लिखकर दे देगा। हाँ उसमें किस प्रकार के भाव होने चाहिए पहले ही बता देना होगा। साहित्य में कृत्रिम मेधा की संभावनाएँ और चुनोतियाँ निम्नलिखित है-

1) सृजनात्मक सह-लेखन : कृत्रिम मेधा बहुत सारे टूल्स मनुष्य ने हसील कर लिए है। उसमें 'चैट जिपिटी' यह एक ऐसा अप्लीकेशन है जिससे हम कविता, कहानी, निबंध, ग़ज़ल, गीत नाटक आदि साहित्य का सृजन कर सकते है। कृत्रिम मेधा कथानक का विषय सुनिश्चित करने से लेकर पात्रों का चरित्र-चित्रण का विश्लेषण और कविता की लय-ताल ठीक करने में सहयोग करती है। प्रभावी संवाद लेखन का कौशल भी कृत्रिम बुद्धिमता की विशेषता कही जा सकती है। इतना ही नहीं इसे अन्य कई भाषा में अनुवाद भी कर सकते है। कुल मिलाकर कृत्रिम मेधा मनुष्य की तरह सोचने, समझने और साहित्य लेखन करने में सक्षम है।

2) समय की बचत : जहाँ इंसानी बुद्धि कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक आदि के सर्जन में कई वर्षो का समय लगा देता है वहाँ कृत्रिम मेधा कुछ ही पलों के भीतर तत्काल साहित्य सृजन कर देता है। लेखक और कवियों के द्वारा उसे प्रकाशित करने में सालों का समय लग जाता है। कृत्रिम मेधा उसे ऑनलाइन तरिके से बहुत ही कम समय में प्रकाशित भी कर देता है। भाषा मॉडल के विभिन्न उपकरण पहले उस भाषा के शब्दों का अध्ययन करते है जिस भाषा के माध्यम से उसे आदेश दिया जाता है। इस तरह कृत्रिम मेधा तत्काल साहित्य सृजन करने में सहायता प्रदान करता है। परिणामत: वर्तमान में भागदौड़ भरी जिंदगी में समय और पैसे की बचत होती है।

3) साहित्य संकलन और प्रकाशन : कृत्रिम मेधा पुस्तक प्रकाशन की दुनिया को भी बड़े पैमाने पर प्रभावित कर रहा है, विशेष रूप से

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

पुस्तक सुझाव, विपणन और संकलन के क्षेत्रों में। अमेज़ॅन, गुडरीड्स और स्पॉटिफ़ाई पहले से ही पाठकों के खरीदारी, पठन इतिहास या खोजे गए शब्दों के आधार पर पुस्तकों का सुझाव देने के लिए एआई एल्गोरिदम पर बहुत अधिक निर्भर हैं। ये अनुशंसा एल्गोरिदम पाठक गतिविधि के रुझानों का अध्ययन करने और पाठक की पसंद का सटीक अनुमान लगाने के लिए मशीन लर्निंग का उपयोग करते हैं, जिससे पाठकों को ऐसे नए लेखकों और शैलियों से परिचित कराया जाता है जिनसे वे अन्यथा कभी परिचित नहीं होते।

4) वैश्विक स्तर पर पहुँच : कृत्रिम मेधा से सृजन साहित्य कथा, कविता गीत, ग़ज़ल आदि को कम्प्यूटर इंटरनेट के जरिये पुरे विश्व में पहुँचाया जाता है। अतः समस्त जगत के पाठक एक साथ एक ही समय में पढ़ सकते है। सामान्य तौर पर किसी लेखक की रचना प्रकाशन के बाद बहुत ही कम लोगों तक पहुँच पता है। किंतु कृत्रिम मेधा डिजिटल साहित्यिक मंच उपलब्ध करता है। इसलिए वह साहित्य विश्व के हर देश और प्रान्त तक कम समय में पहुँच जाता है। अतः कृत्रिम मेधा गुण और प्रभाव में मनुष्य की बुद्धि को पीछे छोड़ रहा है।

5) शुद्ध वर्तनी और प्रूप रीडिंग : कृत्रिम मेधा के उपकरण स्वयं शुद्ध वर्तनी के नियमों का पालन करते हुए प्रूप रीडिंग और व्याकरण की अशुद्धियों को भी सुधारने का कार्य करती है। इस कार्य के लिए अलग से विशेषज्ञ की आवश्यकता नहीं पड़ती। इससे न केवल समय की बचत होती है बल्कि आर्थिक बचत का भी वे लाभ उठा सकते है। पेपरलेस होने के कारण उन्हें ट्रांस्पोर्ट के खर्चे की भी बचत हो जाती है। इस तरह कृत्रिम मेधा का योगदान साहित्य सृजन में मनुष्य की बुद्धि की तरह पूर्णता प्रदान करने में सहयोग करता है। मानव निर्मित साहित्य की कमियों को पूरा करने का प्रयास कृत्रिम मेधा कर रही है।

6) नये साहित्यकार के लिए बड़ा मंच : कृत्रिम मेधा नव साहित्यकारों को बड़ा डिजिटल मंच उपलब्ध करता है। साहित्य की दुनियाँ में कदम जमाने के लिए उन्हें संघर्ष नहीं करना पड़ता। शोहरत और दौलत पाने के लिए उन्हें वर्षो का इंतजार नहीं करना पड़ता। कृत्रिम मेधा के सहयोग से साहित्य सृजन कर वे रातों-रात बड़े लेखक की पंक्ति में खडे हो सकते है। नव लेखक के लिए प्रताड़ना और उपहास का विषय कृत्रिम मेधा ने खत्म कर दिया है।

चुनोतियाँ :

साहित्य में कृत्रिम मेधा के बढ़ते उपयोग के साथ कई नैतिक मुद्दे सामने आते हैं जिनका समाधान आवश्यक है। इनमें से एक सबसे बड़ा मुद्दा लेखकत्व का है। यदि किसी मशीन को लिखना सिखाया जाता है, तो वह किसका है? एल्गोरिदम के आविष्कारक का, इनपुट प्रदान करने वाले का, या मशीन का? यह उन सवालों में से एक है जो बौद्धिक संपदा और रचनात्मक लेखकत्व को भ्रमित करता है और जिसका जवाब देने के लिए हमारा मौजूदा कॉपीराइट कानून अभी तक पूरी तरह से तैयार नहीं है। एक अन्य चिंता यह है कि कृत्रिम मेधा के उपयोग में यह खतरा भी है कि लेखक जितना अधिक तकनीकी बुद्धि का उपयोग करेंगे, मानवीय रचनात्मकता का महत्व उतना ही कम होता जाएगा। हालांकि कृत्रिम बुद्धि का लेखन मानवीय लेखन की नकल करने में अद्भुत है, फिर भी यह भावनात्मक गहराई, अनुभवात्मक जटिलता और उद्देश्यपूर्णता से भरपूर नहीं हो पाता, जो वास्तव में महान साहित्य की पहचान हैं। कृत्रिम मेधा के उपयोग से निर्मित साहित्य में मौलिकता का प्रश्न भी बहुत जटिल होगा। इसमें भाषाई संवेदना का आभाव होने से पत्रों के सुख-दुःख और हर्ष-विषाद को भलीभांति अभीव्यक्त नहीं कर सकेगा। साहित्य में नैतिक मूल्यों का आभाव रहेगा। और तो और लेखक के वैक्तिकीकरण समाप्त हो जाएगा।

निष्कर्ष : साहित्य लेखन में कृत्रिम मेधा का भविष्य अभी शुरू ही हुआ है और इसकी अपार संभावनाओं का अभी पता चलना बाकी है। जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकनीक में सुधार होगा, यह रचनात्मक लेखन, साहित्यिक विश्लेषण और प्रकाशन के लिए अधिक से अधिक संभावनाएं प्रदान करेगी। साहित्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य ऐसा हो सकता है जिसमें मशीन लर्निंग एल्गोरिदम को उत्पादन प्रक्रिया में अधिकाधिक एकीकृत किया जाएगा, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता लेखकों के साथ न केवल

विशिष्ट रचनाओं पर बल्कि संपूर्ण साहित्यिक परंपराओं पर भी काम करेगी, जिससे लेखन के नए तरीके और शैलियाँ प्रभावित होंगी।

संदर्भ :

1.गुप्ता अंजलि, डिजिटल युग में हिंदी साहित्य, वाणी प्रकाशन मुंबई 2022

2.शर्मा सीमा,डिजिटल साहित्यः उभरते हुए रुझान प्रकाशन साहित्य अकादमी, 2021

3.वर्मा राकेश,आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और साहित्यिक सृजन, हिंदी विज्ञान प्रेस, 2022

4.गुप्ता प्रियंका, भाषा में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभाव, शारदा पब्लिशर्स, 2021

5.कुमार सुनील सिंह, साहित्य में Al का योगदान, राष्ट्रीय साहित्य परिषद, 2019

6.समीर सिंह, मशीन लर्निंग और साहित्यिक रचनाएँ, राष्ट्रीय साहित्य प्रकाशन, 2020

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)